एस॰ एस॰ कॉलेज, जहानाबाद।
विभाग - हिन्दी
विषय - हिन्दी रचना पत्र
वर्ग - स्नातक भाग - 1
शिक्षण माध्यम - पार्श्व - एच
समय - 11 बजे से 12 बजे तक, 27.7.2020
शिक्षक - डॉ॰ रेखा वर्मा
पाठ - संक्षेपण

प्रिय - छात्र - छात्राएँ!

संक्षेपण की परिभाषा

किसी विस्तृत विवरण, सविस्तर व्याख्या, वक्तव्य, पक्ष - व्यवहार या लेख के तथ्यों और निर्देशों के ऐसे संयोजन को 'संक्षेपण' कहते हैं जिसमें अप्रासंगिक असम्बद्ध पुनरावृत्त और अनावश्यक बातों का त्याग एवं सभी अनिवार्य, उपयोगी तथा मूल तथ्यों का क्रमबद्ध प्रतिदर्श संक्षिप्त संकलन हो।

इस प्रकार संक्षेपण एक स्वतः पूर्ण रचना होती है, जिसे पढ़ लेने के बाद मूल संदर्भ को पढ़ने की कोई आवश्यकता नहीं होती। सामान्यतः लोग लम्बे-चौड़े विवरण के चक्कर में अनावश्यक अप्रासंगिक और एक ही बात के लिए कई उदाहरण के साथ-साथ तथ्यों की पुनरावृत्ति तक कर जाते हैं। ऐसे ही उद्धरणों को संक्षिप्त करने की कला का नाम संक्षेपण है जिसमें मूल छूटने न पाये एवं एक निर्धारित भाग में शब्दों की संख्या सीमित किया जाता है। सच कहा जाय तो गागर में सागर भरने की कला

संक्षेपण है। मूल रूप से विशेषणों का परित्याग, सामासिक शब्दों का प्रयोग अनावश्यक बातों को छोड़ना और किसी भी स्थिति में मूल बातों तथ्यों को बरकरार रखना सरल काम नहीं है। इसके लिए निरन्तर अभ्यास संयत एवं सजग रहकर करने की आवश्यकता है। यह एक प्रकार से भाषा का मानसिक प्रशिक्षण और मानसिक व्यायाम है।

संक्षेपण के कुछ गुण हैं और कुछ नियम हैं इन्हें भी ध्यान में रखने की आवश्यकता है। इसके गुण हैं – 1. पूर्णता, 2. संक्षिप्तता, 3. स्पष्टता, 4. मुख्य विचार या तथ्य 5. सरलता एवं शुद्धता 6. प्रवाह एवं क्रमबद्धता, 7. शीर्षक का चुनाव। इसके अलावे संक्षेपण के कुछ विषयगत नियम हैं तथा कुछ शैलीगत नियम हैं। उपर्युक्त सभी बिन्दुओं पर चर्चा अगली कक्षा में विस्तृत रूप से की जायेगी। तबतक आप सब कहीं से भी कोई अवतरण लेकर उसका एक तिहाई भाग में संक्षेप करने की कोशिश करेंगे। इसमें अभ्यास अति आवश्यक है।

[illegible]

27.7.20